UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष-12, अंक-42, जुलाई - सितम्बर 2022

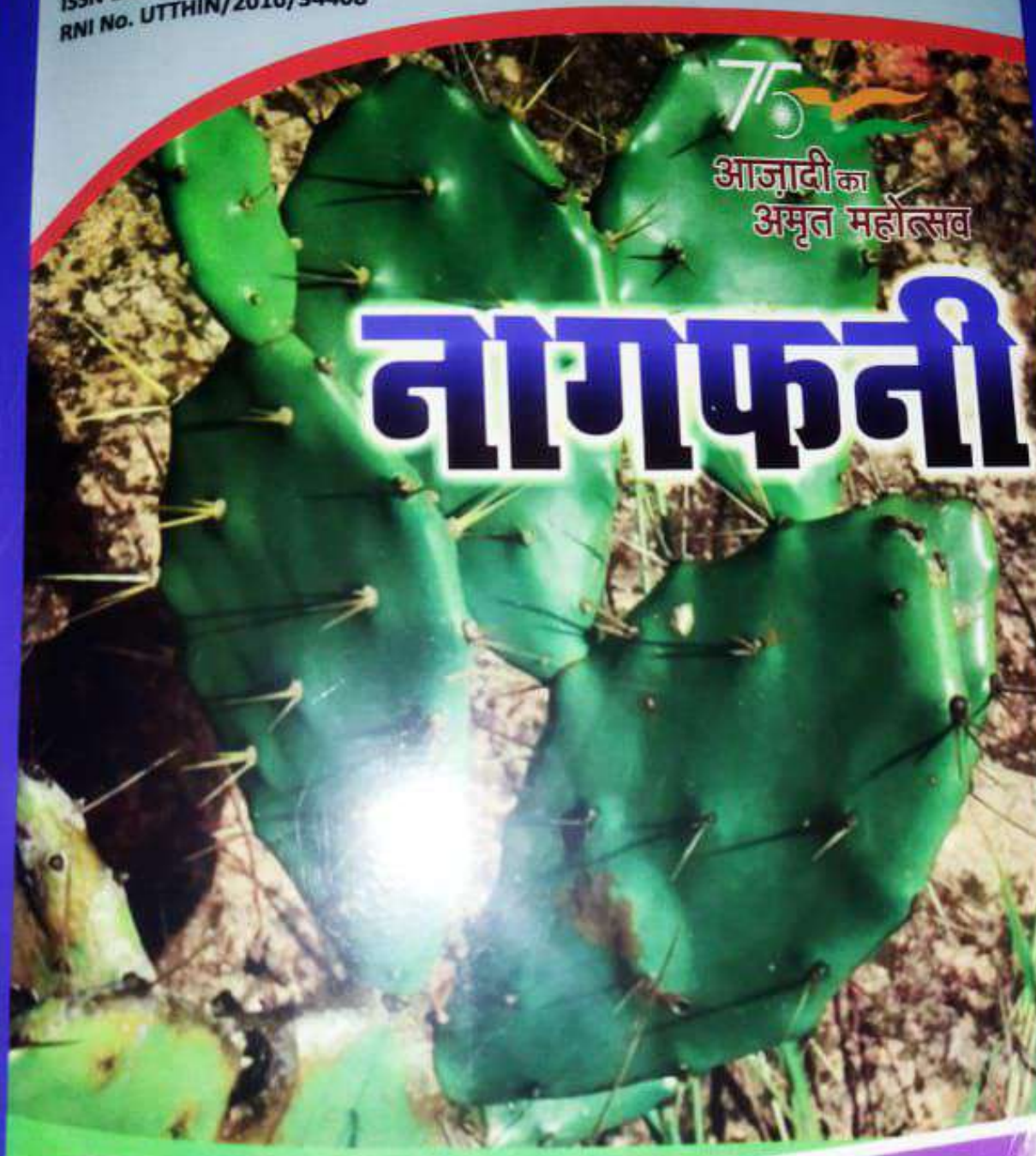

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नागफनी

मूल्य ₹ 150/-

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार अज्ञेयजी का सम्पूर्ण नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन है। प्रयोगवाद के यथार्थ को प्रयोगात्मक रूप में उभारते हुये अज्ञेयजी ने हिन्दी साहित्य में एक नए पथ का उद्घाटन किया। यथार्थवाद तथा बौद्धिकता को स्वीकारते हुये इन्होंने अपने रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन की जड़ता, कुंठा, अनास्था, मानसिक संघर्ष, एकाकीपन के सत्य को चित्रित किया है। प्रेमचंद द्वारा तैयार किए गये यथार्थवादी लीक पर चलते हुये उन्होंने हिन्दी साहित्य में वैयक्तिकता, मानव मन की चाह, प्रेम तथा काम चेतना का खुलकर चित्रण किया। फ्रायड के सिद्धान्त से प्रभावित वह एक मनोविश्लेषणवादी साहित्यिक हैं। वह एक सुप्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार होने के साथ साथ एक अच्छा कहानीकार भी हैं। अज्ञेयजी के उपन्यासों से लेकर कहानी तक मनोविश्लेषणवादी विचारधारा परिस्फुट होते हैं। उनके अन्यतम कृति 'शेखर: एक जीवनी' पूर्णरूपेण मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। अतः एक प्रयोगवादी लेखक होने के नाते उन्होंने जिये हुये जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने कृतियों में अंकित किया है।

आजादी के साथ साथ भारतीय समाज में मध्यवर्ग की उदय होती है और उनके साथ ही आधुनिक भारतीय साहित्य में कहानी का जन्म होता है। और धीरे धीरे कहानी का विकास होता जाता है, भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग तथा छायावाद से गुजरते हुये कहानी प्रयोगवादी विचारधारा से प्रभावित होने लगती है और जीवन के यथार्थ को कहानियों में व्यक्त किए जाने लगते हैं। अतः कहा जा सकता है कि कहानी के क्षेत्र में अज्ञेयजी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है, उन्होंने लगभग 70 कहानियाँ लिखी। अज्ञेय जी खुद कहानी के बारे में कहता है कि, "वे कहानियाँ जल्दी पुरानी नहीं होती है, या जो पुरानी होकर भी नयी बनी रही हैं या नयी हो गयी हैं, उनमें रचनाकार की दृष्टि सामाजिक यथार्थ की परिधि में बंधी न रहकर मानवीय यथार्थ पर केन्द्रित रही होगी।" उनके द्वारा विभक्त किए गए 'खेपों' के अनुसार प्रथम 'खेप' की कहानियाँ क्रांति-चेतना तथा प्रेम संवेदना से पूर्ण है, द्वितीय 'खेप' की कहानियाँ भूमि आंदोलन और जेल-जीवन पर आधारित हैं। अतः उनके कहानियाँ मानवीय यथार्थ के साथ पूरी तरह जुड़ा हुआ है। जैसे कि 'रोज़' (ग्रैंगिन), 'अलिखित कहानी', 'अछूते फूल', 'जिजीविषा' (जीवन शक्ति), 'पहाड़ी जीवन', 'शत्रु', 'दुख और तितलियाँ' आदि हैं। उनके इन कहानियों में मानवीय संवेदना के अनेक पहलुओं का उद्घाटन तथा चित्रण अति तीव्रता और यथार्थता के साथ हुआ है।

अज्ञेय के 'ग्रैंगीन' कहानी चरित्र- प्रधान एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। बाद में उन्होंने उसका नाम बदलकर 'रोज़' कर दिया। इस कहानी में मध्यवर्गीय मानसिकता के साथ साथ स्त्री जीवन की विवशता, नीरसता, यांत्रिकता, घुटन का यथार्थ चित्रण है। मालती नामक स्त्री को केन्द्रित करते हुये लिखी गयी इस कहानी में उनके वैवाहिक जीवन के यांत्रिकता तथा जड़ता को चित्रित किया गया है। रोज की दिनचर्या से उलझा हुआ उनके जीवन कितनी यंत्रवत है, अपनी बच्चे की गिर जाने पर तथा उनके क्रंदन से भी निरुद्वेग होकर कहनेवाली यह कथन कि यह तो रोज़ की बात आदि से उनके मनुष्य यंत्र में बदल जाने की त्रासदी को व्यक्त करता है। उनकी यांत्रिकता इतनी भयावह हो जाती है कि जीवन-मरण की घटना भी उन को प्रभावित नहीं करती है। जब मालती के पति महेश्वर ग्रैंगीन के घाव इलाज के हेतु किसी की बाँह, या किसी की टांग काटकर इलाज करने की बात लेखक को कहता है तब वह बिना कुछ सोचे समझे वह कह उठती है कि, " पहले तो काँटे ही नहीं होते होंगे, आज तक सुना नहीं था कि काँटों के चुभने से मर जाते हैं।" महेश्वर की दिनचर्या में भी रोज़ काँटे लगने से ग्रैंगीन बन गए घाव के इलाज करना ही है, रोज़ आकर खाना खाके चले जाते हैं, जो उनके जीवन के स्थायी दिनचर्या है। जिसके कारण उनके जीवन में भी कोई नयापन नहीं है। पति-पत्नी के संबंध में जो लगाव होना चाहिए था उसमें भी कमी है, साथ ही बच्चे के प्रति भी सिर्फ दोनों कर्तव्य का पालन ही करते हैं। अतः इस कहानी के माध्यम से [illegible] मध्यवर्गीय जीवन के जड़ता का चित्रण मिलता है। [illegible] घटनाओं के इर्द गिर्द घूमती है, पति की प्रतीक्षा, केवल कर्तव्य [illegible] और समय गिनना। समाज व्यवस्था के कारण मालती [illegible] पशु के रूप में जो ऊब, छटपटाहट है उसका यथार्थ [illegible] कहानी में मानवीय संवेदना का जो विघटन हुआ है [illegible] मिलता है। पति पत्नी के नीरस, निर्जीव संबंधों में मानवीय [illegible] (अपने पुराने घनिष्ठ मित्र को वर्षों बाद मिलने के बावजूद) [illegible] जीवन संवेदनहीनता के कारण हुई यांत्रिकता का [illegible] आधुनिक जीवन के रोज़ के दिनचर्या के कारण [illegible] छटपटाहट से मानवीय संवेदना का जो अवमूल्यन है [illegible] है। अज्ञेय जी द्वारा लिखे गये अन्य एक महत्वपूर्ण कहानी है [illegible] पहले 'जीवन शक्ति' नाम से प्रकाशित हुये थे। इसमें [illegible] भिखमंगे संथाल युवती की कहानी है। ईसाई धर्म के [illegible] बीएट्रिस था, जो पहले एक अच्छी जीवन बिताती थी लेकिन [illegible] माँ-बाप के मृत्यु के बाद मिशन में नौकरी न लगने पर वह [illegible] जीने लगी। फिर भी उनमें आत्माभिमान था, अच्छी तरह [illegible] की जीवन बिताना चाहती थी, साथ अपना एक घर बनाने की [illegible] जहाँ बाहर वह फूल लगाएगी और बच्चे को झुलाएगी। [illegible] दामु नामक भिखमंगे से होता है और उनके सपनों को तथा [illegible] लालसा को एक आधार मिलता है। दामु और बातरा के [illegible] जीवन के आपसी सह-संबंध को दर्शाता है। वह एक दूसरे के [illegible] है। उनके मन में जो प्रेम है, जो चाह है उसे एक आधार मिलता [illegible] के माध्यम से लेखक उपेक्षित वर्ग के दीनता, दयनीय स्थिति [illegible] करते बल्कि उनके जो जीवन जीने की चाह है, अतः मन के [illegible] उसका एक सार्थक तथा सजीव प्रत्यंकन किया है। लेकिन [illegible] दुकानदार उनलोगों के मजाक उड़ाते थे, फब्तियाँ कसने लगे [illegible] और बातरा एक घर बसाने लगता है और बातरा की सपना साकार [illegible] है। दामु के साहचर्य उनके लिए मादक बनती जाती है। लेकिन [illegible] दुकानदार के उनके टीन से बनाए हुये घर को देखकर उनके प्रति [illegible] लगती है क्योंकि ग्राहक के दृष्टि से उनके दुकान छिप गए थे [illegible] पुलिस के सहायता से दामु के घर को तोड़ दिया। इसके द्वारा [illegible] वर्ग का निम्न वर्ग के लोगों के प्रति जो दुर्व्यवहार है उसका चित्रण [illegible] उद्देश्य कर दुकानदार कहता है "एहो! बड़ा आया घर में रहनेवाला [illegible] यहीं नंगा पड़ा रहता था और कुत्ते बदन चाटते थे तब?" इसके [illegible] उस वर्ग के लोगों के जीवन के करुण स्थिति का चित्रण मिलता है [illegible] के प्रति समाज के जो नजरियाँ है उसका एक नग्न चित्रण अज्ञेय [illegible] उनके जीवन के स्वप्न को समाज ही तोड़ देते है। समाज ही उनके [illegible] कठिन बना देते है, उनके प्रति संवेदना की भावना नहीं रखते है [illegible] कहानी में नैतिकता का जो विघटन हुआ उसका चित्रण हुआ है [illegible] के प्रति संवेदनशील तो है मगर समाज के उच्च वर्ग कहलानेवाले [illegible] के सभ्यजन ही उनके भावनाओं को समझने के लिए तैयार नहीं है और [illegible] को घर से बेघर कर दिया जाता है, लेकिन अपने यायावरी स्वप्न को [illegible] बातरा खत्म होने नहीं देते हैं और गिरीश पार्क में जाकर [illegible] अपना बसेरा बनाने का पुनः कोशिश करता है। उनके मन की जो [illegible] उसका चित्रण लेखक ने किया है तथा सामाजिक यथार्थ को उजागर किया है। अतः दामु और बातरा एक दूसरे के लिए साहस तथा जीने का साधन बन जाता है, आपसी सहयोग को बढ़ावा देता है और एक दूसरे के प्रति संवेदनशील हैं, लेकिन शिक्षित वर्ग ही उनके प्रति उदार तथा संवेदनशील [illegible] अतः यह कहानी समाज के उस नग्न यथार्थ को साकार करती है [illegible] उपेक्षित वर्ग के जो सपने, लालसा तथा जिजीविषा होती हैं

ISSN-1504Nagfani RNIN.-UTTHIN/2010/34[illegible]

उसको सजीव रूप में देखने को मिलती है। 'अकलंक'अज्ञेयजी के अन्य एक छोटी सी कहानी है जिसका पृष्ठभूमि युद्ध के वातावरण है। ड्रांग-हो नदी के पास टीले की चोटी पर चीनी प्रजातंत्र के दो सेना है,पुरुष का नाम है मार्टिन और स्त्री का नाम है लिसा ये दोनों आपस में बातें करते हुये नज़र आते हैं और लिसा मार्टिन को उद्देश्य कर कहती है कि मार्टिन को उनके घर ड्रांग-हो के प्रवाह में बहा देना चाहिए ताकि शत्रु पक्ष के लोग वहाँ आकर रह न सके। लेकिन मार्टिन ऐसा नहीं करना चाहता है। वह चाहते थे कि राष्ट्र के किसान उनके घर में आश्रय ले सके क्योंकि मार्टिन के घर में एक गाँव के लोग रह सकते थे और इसी कारण वह किसान के सहायता के लिए वह घर छोड़ जाना चाहते थे,चाहे वह उनका शत्रु ही क्यों न हो। लेकिन उसके इस भाव को लिसा नहीं समझती है और कहती कि, संपत्ति के लिए इतना मोह,जिससे उनको ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने उनको थप्पड़ मार दिया हो। इस कहानी के जरिये अज्ञेय ने इंसानियत को दर्शाया है,मनुष्य मनुष्य के प्रति जो भावना होती है उसको एक सैनिक कि मन: स्थिति के माध्यम से दर्शाया है। युद्ध है,शत्रु है,फिर भी उसका हृदय निरीह किसान के लिए रोता है,उनके प्रति अनुकंपित होते है। जो मानवीय संवेदना को अति सशक्त तथा सजीव रूप में अभिव्यक्त करता है।

इसके अलावा उनके प्रमुख कहानियों में हैं 'सेब और देव'कहानी जिसमें शिक्षित कहे जानेवाले वर्ग पर तीखा व्यंग है। 'मुस्लिम मुस्लिम भाई भाई' कहानी आहत मानवीय संवेदना और मानव मूल्यों पर आधारित सन् 1947 में लिखी गयी है। विभाजन के समय दिल्ली से पाकिस्तान जानेवाली एक स्पेशल ट्रेन की कहानी है जिसमें सरकारी मुलाजिमें जाते थे। उसी ट्रेन में ही तीन औरतें जानेवाली थी क्योंकि उनके द्वारा आखरी साधारण ट्रेन छूट गयी थी। अतः वेलोग दिलासा ले रहे थे की मुस्लिम लोग ही होंगे उसमें तो अफसर होने के बावजूद वेलोग साथ में जा सकेंगे। लेकिन इसके ठीक विपरीत एक परिदृश्य देखने को मिलता है,मुस्लिम मुस्लिम की भाई चारा तो दूर की बात इंसानियत के नाते भी उनलोगों को वहाँ बैठने नहीं देते हैं। जिसके द्वारा मनुष्य मनुष्य के प्रति उदार भाव की जो कमी है,हैसियत के हिसाब से लोग एक दूसरे के प्रति जो मानवीय संवेदना को ही खो दिये है उसका एक यथार्थपरक चित्रण इस कहानी में मिलता है। अतः उनके अन्य कहानी 'दुख की तितलियाँ'में माँ के मृत्यु और उसके पश्चात जो सामाजिक प्रक्रिया घटते हैं उसके कारण एक पुत्र के मन में जो प्रभाव पड़ता हैं उसका चित्रण है। 'इन्दु की बेटी'एक मध्यवर्गीय परिवार के कहानी है इसमें एक पढ़े-लिखे विवाहित पति के मनोदशा का चित्रण हैं जिसका पत्नी पढ़े-लिखे नहीं है,और उनके गँवार होने के कारण रामलाल उनसे खीझते थे,एक दिन उसके पत्नी का उसके कारण ही मृत्यु हो जाती है। वह अपने पत्नी की प्रेम को समझ ही नहीं पाये और पति-पत्नी के बीच जो अनुकंपा, प्रेम भाव होती है उसकी तुलना किसी अन्य चीज़ के साथ तुलना नहीं किया जा सकता है,अपनी पत्नी की वह बाह्य रूप-सौन्दर्य को ही ध्यान में रखते हैं जिसके कारण वह पत्नी के प्रेम को समझ नहीं पाये और अंत में अपने आपको दोषी,अपराधी मानकर ज़िंदगी काटते हैं और पागल से हो जाते हैं। इसमें मानवीय प्रेम की,मूल्यों की जो अहमियत है उसको अंकन करने का प्रयत्न अज्ञेयजी ने किया है। अतः अज्ञेयजी ने परंपरा से हटकर एक नया प्रयोग करने का प्रयत्न किया। संघर्षों,घटनाओं को छोड़कर मानव के आंतरिक मनन स्थिति,सूक्ष्म अनुभूतियों,तथा छोटी से छोटी संवेदनाओं को लेकर अपने रचनाएँ किए। प्रतीकात्मकता उनके कथा-शैली का विशेषता है,जिसकी सहायता से कहानी में जिज्ञासा,रोचकता उत्पन्न करता हैं। मैंने प्रयोग किए तो शिल्प के भी किए,भाषा के भी किए,रूपकार के भी किए,वस्तु चयन के भी किए,काल की संरचना को लेकर भी किए,लेकिन शब्द-मात्र की व्यंजकता और सूचकता की एकांत उपेक्षा भी नहीं की।" अतः अज्ञेय की कहानी में समाज के हर वर्ग के प्रति संवेदनशीलता मिलते हैं। सैनिक जीवन से लेकर देशद्रोही,भिखमंगे से लेकर धनी वर्ग,स्त्री हो या पुरुष हर किसी के मानसिक स्थिति की प्रति संवेदनशील रहे हैं और उनके कहानियों में भी वही संवेदनशीलता परिलक्षित होते हैं।वर्तमान समय में कहानी तथा वर्तमान संदर्भ में अज्ञेय की कहानी की महत्व उल्लेखनीय है। आधुनिक जीवन-यापन के भाग दौर में व्यक्ति के जीवन घुटन,नीरसता,जड़ता,एकाकीपन,स्वार्थपरता,मानवीय मूल्यों के विघटन तथा मानवीय संवेदना के अवखंडन से ग्रस्त है। जिसका प्रगटन अज्ञेय जी ने अपने कहानी के माध्यम से किया है। आज जिस समय समाज अति व्यक्तिवादी हो गए है,मानसिक स्थिति उलझा हुआ है,समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति निर्दय तथा कठोर हो गए है, उसी समय में अज्ञेय की कहानी की प्रासंगिकता आ जाती है,क्योंकि उन्होंने अपने कहानियों में समाज के जिस नग्न यथार्थ का चित्रण किया था वह आज के समाज में भी व्याप्त है। उनके 'ग्रैंगीन'अथवा 'रोज़'कहानी में अभिव्यक्त मालती महेश्वर की जो संवेदनहीन संबंध है वह आज के समाज में भी मिलते है,उनलोगों के तरह अपना कर्तव्य यंत्रवत पालन करनेवाला व्यक्ति भी आज के समाज में है। अतः मानवीय संवेदना का जो विघटन हुआ है उसको लेखक मनोविश्लेषण से अपना परिचय होने के कारण अधिक सफलतापूर्वक दिखाने में समर्थ हुये है। इस प्रकार की स्थितियाँ लोगों के जीवन को नष्ट कर देती है और अवसादग्रस्त बना देती है। साथ ही विज्ञान और तकनीकी विकास ने लोगों को अधिक आत्म-केन्द्रित बना दिया है। अतः ऐसी स्थिति में एक ही उपचार मिलता है कि जीवन को नए नए रूप में,नए नए आविष्कार के साथ जीने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि मानवीय संवेदना अटूट रहे और जीवन नित-नवीन रूप में उभरकर आए। 'जिजीविषा'कहानी में अभिव्यक्त भिखमंगे की जो चित्रण है वह तो समाज में प्रासंगिक हमेशा से रहा है। स्वार्थपरता,शत्रुता की भावना को त्यागकर इंसानियत की बीज बोना वर्तमान समय में समाज तथा व्यवस्था दोनों के लिए उपयोगी है। अतः भेद-भाव को बढ़ावा न देकर एक साथ आगे बढ़ने का संदेश मिलता है।

******

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. राय,गोपाल (2014). हिन्दी कहानी का इतिहास,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली.
2. डॉ नगेन्द्र (2015). हिन्दी साहित्य का इतिहास,मयूर पैपरबैक्स,नई दिल्ली.
3. राय,गोपाल (2010). अज्ञेय और उनका कथा साहित्य,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली.
4. चतुर्वेदी,रामस्वरूप (2008). अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या,वाणी प्रकाशन,
5. नई दिल्ली.
6. ऑनलाइन उपलब्ध सामग्री:(कहानियाँ)
7. ग्रैंगीन, gadyakosh.org
8. अकलंक, gadyakosh.org
9. जिजीविषा, gadyakosh.org
10. सेब और देव gadyakosh.org

ISSN-1504Nagfani RNIN.-UTTHIN/2010/34408